खून का मलबा पकड़वाएगा खिलाड़ियों को

खेलकूद प्रतिस्पर्धाओं में प्रदर्शन बेहतर बनाने के लिए कुछ एथलीट्स दवाइयों का सेवन करते हैं। प्रतिस्पर्धा के आयोजक इस तरह के तौर-तरीकों पर अंकुश लगाने और इन्हें पकड़ने के लिए तरह-तरह की जांच का सहारा लेते हैं। मगर एक नाजायज़ तरीका ऐसा है जिसे पकड़ने के लिए परीक्षण विकसित करना खासा मुश्किल रहा है। अब लगता है कि यह तरीका भी जांच के दायरे में आ ही जाएगा।

खिलाड़ी करते यह हैं कि प्रतिस्पर्धा से कुछ समय पहले अपना कुछ खून निकालकर अलग रख देते हैं। शरीर इस खून की पूर्ति कर लेता है। फिर प्रतिस्पर्धा से पहले खिलाड़ी वह निकालकर रखा गया खून वापिस अपने शरीर में डाल लेते हैं। इस तरह से उनके शरीर में अतिरिक्त खून हो जाता है और उनकी मांसपेशियों को अतिरिक्त ऑक्सीजन मिलती है, जिससे वे बेहतर काम कर पाती हैं।

चूंकि डाला गया खून स्वयं का होता है, इसलिए इसकी जांच नहीं हो पाती। मगर जर्मनी के फ्राइबर्ग विश्वविद्यालय के ओलफ शूमाकर और उनके साथियों ने इस धोखाधड़ी को पकड़ने का एक तरीका खोज निकाला है। शूमाकर व साथियों ने 6 सामान्य लोगों के शरीर से कुछ खून निकालकर अलग रख दिया और 35 दिन बाद उसे वापिस उनके शरीर में डाल दिया। एक और दो दिन बाद इन लोगों के रक्त के नमूनों की जांच करने पर पता चला कि उनके खून की सफेद रक्त कोशिकाओं में वह जीन अधिक सक्रिय था जो क्षतिग्रस्त कोशिकाओं को पहचानने व उनका सफाया करने में भूमिका निभाता है।

शूमाकर के मुताबिक शरीर से निकालकर भंडारण के दौरान लाल रक्त कोशिकाएं टूटने लगती हैं और उनकी कोशिका झिल्लियों वगैरह का मलबा जमा हो जाता है। जब इस खून को वापिस शरीर में डाला जाता है तो सफेद रक्त कोशिकाएं इस मलबे को साफ करने सक्रिय हो उठती हैं। इस प्रक्रिया को देखा जा सकता है क्योंकि जीन के सक्रिय होने पर उसका परिणाम सफेद रक्त कोशिकाओं की सतह पर नज़र आता है।

वैसे अभी यह नहीं कहा जा सकता कि यह परीक्षण अगले ओलंपिक खेलों (2012) तक इस रूप में विकसित हो जाएगा कि इसका इस्तेमाल किया जा सके क्योंकि किसी भी परीक्षण को अपनाने से पहले यह सुनिश्चित करना होगा कि कहीं उसमें बेगुनाह एथलीट्स तो नहीं फंसेंगे। यानी अभी काफी शोध कार्य की ज़रूरत होगी। फिर भी एक दिशा तो मिली ही है। ***(स्रोत फीचर्स)***